'अर्थ' हीन लक्ष्मीपूजन

आज देश दुनिया में भारतवासी दीपावली मना रहे हैं. टिमटिमाते दियों से फैलते उजास का यह पांच दिवसीय पर्व तमसो मा ज्योतिर्गमय का महत्व हमारी जीवन संस्कृति में रखता है. हर्ष और उमंग के संग अंधकार से प्रकाश की ओर चलो, बढ़ो का संदेश देता है. आज के मानव मूल्य में इसका गुढार्थ गरीबी, असत्य,अशिक्षा, बेरोजगारी, कुरितियों आदि अनिष्ठों से छुटकारा पाने का है तो दूसरी ओर सुख ,ऐश्वर्य,समृद्धि और आनंदमय जीवन पाने लक्ष्मी की पूजा करने का वास्तव भी इससे जुड़ा है. लक्ष्मीपूजन के बगैर आज जीवन 'अर्थहीन' है. कैशलेस सिस्टम और डिजीटल करंसी के दौर में लक्ष्मीपूजा का महत्व और भी बढ़ गया है. पिछली बार लक्ष्मीपूजन जोरदार हुआ था. उस दिवाली गुलशन भी हंस रहा था और माली भी ठहाके लगा रहा था. सब मंगल ही मंगल था, लेकिन...

8 नवंबर 2016 की रात नोटबंदी ऐलान कर दी गई. 500-1000 के नोट रातोंरात बेकार किए जाने से सभी सकते में आ गए. कालाधन, भ्रष्टाचार, नक्सलवाद और आतंकवाद खत्म होने के दावे किए गए. एटीएम सूख गए. पैसे-पैसे को मोहताज लोग बैंकों के सामने भूखे-प्यासे दिन-रात कतारों में बने रहे. इन्हीं कतारों में सौ-सवा सौ लोगों की मौत के बावजूद सब अच्छा हो रहा है तो थोड़ा-सा सह लेंगे के भाव फिर भी लोगों के चेहरों पर बने हुए थे. नये साल का सूरज नोटबंदी का दर्द लेकर ही उगा था. नोटों के अभाव में बाजार में ग्राहकी भी सूख गई, लेकिन ज्यादा हाय-तौबा फिर भी नही मची. इसके बाद एक देश- एक टैक्स का नारा लगाकर आनन-फानन में जीएसटी को अमल में लाया गया. इस बार कारोबार में सुगमता, टैक्स चोरी का खात्मा, कर प्रणाली मे सुधार के साथ सरलीकरण और पारदर्शिता तथा महंगाई खत्म होने और बाजार के फलने-फूलने की बातें कहीं गई, लेकिन...

नोटबंदी के सालभर और जीएसटी के लगभग 5-6 माह बाद भी बाजारों में सन्नाटा है. धनतेरस को धन के लिए बाजार तरस गया. व्यापारी और जनता सब परेशान है. दुकानों में माल लबालब हैं, लेकिन खरीदनेवाले गायब हैं, क्योंकि जनता की जेब खाली है. हर कोई नोटबंदी और जीएसटी पर हायतौबा मचा रहा है.असंगठित खुदरा व्यापारियों के अखिल भारतीय संगठन कैट ने धनतेरस की पूर्व संध्या इस दीपावली पर खुदरा कारोबार 40 फीसद कम होने और व्यापारियों के लिए यह दीवाली काली रहने का अनुमान जताया है.इसमें नोटबंदी और जीएसटी के असर से तबाह कारखानदारी और थोक व्यापार को जोड़ दिया जाए तो अबकी बार दीपावली के उस व्यापार को 60-70 फीसद की शुद्ध चपत लगी है, जिसे व्यापारी अपने सालभर के व्यवसाय का एक बड़ा हिस्सा मानते हैं देशभर के बाजारों में यह सन्नाटा ऐसे समय पसरा है, जब अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक की सलाना बैठकों में भाग लेने के लिए देश के वित्तमंत्री अरूण जेटली अमेरिका की लंबी यात्रा पर हैं और उस मंच से उनका कहना है कि नोटबंदी और जीएसटी की वजह से अर्थव्यवस्था में आई सुस्ती लगभग खत्म होने के स्पष्ट सबूत मिल रहे हैं, जबकि उससे कुछ ही रोज पहले विकासदर घट कर 5.7 फीसद करार दी गई. गुजरात की चुनावी धरती पर पीएम नरेंद्र मोदी विकास पागल हो गया के जवाब में गुजरात ही विकास हैं और गुजरात के विकास का मॉडल देशभर में लागू करने की बात कह रहे हैं. वित्तमंत्री और प्रधानमंत्री के दावे जो भी हों, मगर भूतल पर भारतीय अर्थव्यवस्था की हालत असल में बहुत अच्छी नहीं है. नोएडा, गाजियाबाद, सूरत, लुधियाना आदि आदि आदि... कारखानदारी के क्षेत्रों में फैक्ट्रियों को लगे ताले और बेरोजगारी की फीसद में दिख रहे इजाफे से सत्तारूढ़ भाजपा और सरकार का थिंक टैंक कहलाने वाला तबका भी मुंह खोलने के लिए मजबूर हो गया है. संघ के चिंतक गोविंदाचार्य, एस.गुरुमूर्ति, वाजपेयी के वित्तमंत्री रहे यशवंत सिन्हा समेत कई लोग भारतीय अर्थव्यवस्था में आई गिरावट को लेकर मोदी सरकार को कटघरे में खड़ा कर रहे हैं. यहीं बात विश्व के महानतम अर्थतज्ञों में शुमार रखने वाले मनमोहनसिंह और पी. चिदंबरम ने 8-10

विशेष सम्पादकीय

माह पहले कही थी, तब उन्हें विकास विरोधी तक करार दिया गया था और आज जब आम आदमी इन्हीं बातों को लेकर सोशल मीडिया के जरिए भड़ास निकाल रहा है, तो उसे देशद्रोही करार दिया जा रहा हैं. स्मार्ट सिटी और बुलेट ट्रेन के फेर में फँसी केंद्र सरकार के आर्थिक नीतियों के चारों तरफ आलोचना होनी शुरू हो गई है. बावजूद इसके हुक्मरानों की जुमलेबाजी कम होती दिखाई नहीं दे रही है. आम आदमी के समझ में अब आ रहा है कि विश्व बैंक में रहे मनमोहनसिंह पीएम रहते समय मौनमोहन बने रहे, लेकिन 2012-13 की विश्व महामंदी के दौर में भी उन्होंने अपनी इसी मौन साधना के जरिए भारत की अर्थव्यवस्था को धक्का लगने नहीं दिया था. सुधारों की बात आज 56 इंच का सीना ठोककर की जा रही है, लेकिन नरसिंहराव के मातहत वित्तमंत्री रहते मनमोहन के सुधारवादी कदमों की तुलना में पिछले 3 वर्षों में कोई बड़ा सुधार अर्थव्यवस्था में नहीं किए गए, यह भी लाख टके की एक सच्चाई है.

नोटबंदी के दावे हवा में गुम हो गए. नक्सली वारदातें जारी हैं, कश्मीर में आतंकवाद नए उबाल पर है, भ्रष्टाचार को फन उठा हुआ ही है. काले धन के कुबेर अब भी अपने बिलों में बने हुए हैं. न किसान आत्महत्याएं रूकीं और न ही एलओसी पर शहादत में कोई कमी आई है. जीएसटी की बातें करें तो तीन माह में ही खामियों को दुरूस्त किया गया, लेकिन परेशानियां बरकरार हैं. एक देश एक टैक्स की बात गलत साबित हो गई. जीएसटी में टैक्स की पांच दरें हैं. एक ही वस्तु पर मेक इन के नाम पर अलग-अलग टैक्स है. जीएसटी के बाहर शराब और पेट्रोलियम पर अलग-अलग टैक्स हैं. सेवाशुल्क बैंकों में वसूला ही जा रहा है. टोल टैक्स भी स्पेशल श्रेणी में बरकरार है. आयकर कायम है. महाराष्ट्र में पेट्रोल पर अकालशुल्क की वसूली की जा रही है. कुल मिलाकर जीएसटी के बावजूद एक देश-कई टैक्स का बोलबाला है. दुनिया के देशों में जहां भी जीएसटी लगा, वहां एकल करदर के बावजूद वहां की इकानामी सालों तक डांवाडोल रही. इस सच्चाई के बावजूद मोदी सरकार है कि सब ठीक होने का दावा कर रही है. सरकार और प्रशासन को अब तक जीएसटी सही तरीके से समझ ही नहीं आई है, वहां महीने-दो महीने में रिटर्न भरने को मजबूर व्यापारियों की परेशानियों की कोई सुनवाई नहीं हो रही है.

आज हम अपने आर्थिक इतिहास के सबसे विचित्र दौर से गुजर रहे हैं. दुनिया भी मान रही है कि भारतीय दुनिया की सबसे तेज गति से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था है. अगर हम सरकारी बयानों पर भरोसा करें, तो दुनिया भर की आर्थिक स्थिति संकट में है, लेकिन भारती अर्थव्यवस्था उसमें किसी शांत द्वीप समूह की भांति स्थिर है. इसके मुताबिक मनमोहन सिंह की खराब अर्थव्यवस्था वाला दौर अब बीत चुका है. हालांकि मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद स्टॉक मार्केट में गिरावट आई है. रुपये का अवमूल्यन हुआ है. यही वजह है कि सरकार के आशावादी रुझान और बाजार के रुझान में तालमेल नहीं दिख रहा है. मुख्य रूप से पिछली दीपावली से इस दीपावली तक के उतार-चढ़ाव को देखकर यह अनुमान लगाना कि देश की अर्थव्यवस्था वापस उछल कर उसी वृद्धि दर को प्राप्त कर लेगी एवं पिछले कुछ समय से अर्थव्यवस्था की कई चुनौतियों, जैसे कि रोजगार के अवसर में विस्तार, उद्योग में सतत विस्तार, निर्यात में विस्तार इत्यादि को प्राप्त करने की ओर देश तेजी से आगे बढ़ने लगा है, ऐसा निष्कर्ष निकालना सरकार के लिए सुविधाजनक तो हो सकता है, लेकिन तर्कसंगत कतई नहीं. बहरहाल , सरकार एवं संबंधित संस्थाओं को मौजूदा चुनौतियों का गंभीरता से मूल्यांकन कर कठिनाइयों को दूर करने के लिए ठोस नीतिगत पहल की ओर बढ़ना चाहिए. आलोचकों को भले ही देशद्रोही समझे, लेकिन आलोचना को आइना बनाकर हुक्मरानों को अपनी नीतियों पर पुर्न विचार कर सुधार लाना होगा. इसे मानना ही होगा कि कारें दिखने का मतलब विकास नहीं होता.फैक्ट्री आऊट ग्रोथ तबाह हो चुकी है. थोक मार्केट का भट्ठा बैठ गया है. बचा था खुदरा धंधा तो वह भी इस दीपावली में रोजी-रोटी का रोना रोने को मजबूर है. व्यापारी खून के आंसू पी रहे हैं. लक्ष्मीपूजन इस मायने में अर्थहीन रह गया है. ऐसे में सरकार के लिए हालात में सुधार लाने के संबंध में किसी भी तरह की लापरवाही या भ्रम अर्थव्यवस्था के लिए अल्पकालिक और दीर्घकालिक तौर पर नुकसानदेह होगा. यदि अभी तत्काल कदम उठाए गए तो क्रिसमस और नववर्ष की उमंग बाजार में कुछ हद तक दिखाई देगी, वर्ना यह मान लेना चाहिए की हमारी आर्थिक व्यवस्था खराब दौर में है और हम मंदी की तरफ बढ़ रहे हैं.

दीपावली कैसे मनाई जानी चाहिये

बाजार के प्रभाव से आज हमने अपने सभी पर्वों को विद्रूप और आक्रामक बना दिया है. अब उनको मनाना अपनी आर्थिक सत्ता का प्रदर्शन करना और आसपास के वातावरण में हलचल पैदा करने जैसा होता है. इसमें से सामूहिकता, प्रेम-सौहार्द और उत्सव के उत्साव जैसी भावनाओं का लोप हो गया है. रही सही कसर चीनी सामानों ने पूरी कर दी.

हर धर्म को मानने वालों को यह स्वीकार करना होगा कि दूसरों के धर्म मे सब कुछ बुरा नहीं है और उनके धर्म मे सब कुछ श्रेष्ठ नहीं है. चूंकि हम हिन्दू बहुसंख्यक हैं और सदियों से इस बात से पीड़ित रहे हैं कि सत्ताओं ने कभी हमारे बुनियादी सिद्धांतो को समझने की कोशिश नहीं की. या तो उन्हें दबाया या उनका उपहास किया गया और उन्हें अनिच्छा से सह लिया गया. नए माहौल में इन पर खुलकर बहस होनी चाहिये थी, जो नहीं हो रही. निरर्थक विषयों को उठाकर समाज में विष घोला जा रहा है. इस बार दीपावली पर पांच दिनों का अवकाश है. इसलिये सब मिल-बैठ कर सोचें, कौन थे हम, क्या हो गए और होंगे क्या अभी.

'आतिशबाजी' जैसा कोई शब्द सनातन धर्म के शब्दकोश में नहीं है. यह पश्चिम एशिया से आयातित है क्योंकि गोला-बारूद भी भारत में वहां से 'मध्ययुग' में आया था इसलिये दीपावली पर राजधानी दिल्ली में पटाखों को प्रतिबंधित करके सर्वोच्च न्यायालय ने उचित निर्णय लिया. हम सभी जानते हैं कि पर्यावरण, स्वास्थ्य, सुरक्षा और सामाजिक कारणों से पटाखे हमारी जिंदगी में जहर घोलते हैं.इनका निर्माण और प्रयोग सदा के लिये बंद होना चाहिये.यह बात बीते 30 सालों में बार-बार उठती रही है.

हमारी सांस्कृतिक परंपरा में हर उत्सव व त्यौहार आनंद और पर्यावरण की शुद्धि करने वाला होता है. दीपावली पर तेल या घी के दीपक जलाना, यज्ञ करके उसमें आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियां डालकर वातावरण को शुद्ध करना, द्वार पर आम के पत्तों का तोरण बांधना, केले के स्तंभ लगाना, रंगोली बनाना, घर पर शुद्ध पकवान बनाना, मिल-बैठकर मंगल गीत गाना, धर्मचर्चा करना, बालकों द्वारा भगवान की लीलाओं का मंचन करना, घर के बही-खातों में परिवार के सभी सदस्यों के हस्ताक्षर लेकर समसामयिक अर्थव्यवस्था का रिकार्ड दर्ज करना जैसी गतिविधियों में दशहरा-दीपावली के उत्सव आनंद से संपन्न होते थे जिससे समाज में नई ऊर्जा का संचार होता है.

बाजार के प्रभाव से आज हमने अपने सभी पर्वों को विद्रूप और आक्रामक बना दिया है. अब उनको मनाना अपनी आर्थिक सत्ता का प्रदर्शन करना और आसपास के वातावरण में हलचल पैदा करने जैसा होता है. इसमें से सामूहिकता, प्रेम-सौहार्द और उत्सव के उत्साव जैसी भावनाओं का लोप हो गया है. रही सही कसर चीनी सामानों ने पूरी कर दी.त्यौहार कोई भी हो उसमें खपने वाली सामग्री साम्यवादी चीन से बनकर आ रही है. उससे हमारे देश के रोजगार पर भारी विपरीत प्रभाव पड़ रहा है. इस साल चीन की सीमा पर दबाव बनाने के विरोध में सोशल मीडिया पर चीनी माल के बहिष्कार का खूब प्रचार हुआ है. देखना होगा कि हमारे देश के लोगों पर उसका कितना असर पड़ रहा है? क्या सही में हम खरीदारी करते समय चीनी मालों का बहिष्कार करने को तैयार हैं?

गनीमत है कि भारत के ग्रामों में अभी बाजारू संस्कृति का वैसा व्यापक दुष्प्रभाव नहीं पड़ा जैसा शहरों पर पड़ा है नहीं तो सब चौपट हो जाता. ग्रामीण अंचलों में आज भी त्यौहारों को मनाते भारत की माटी का सौंधापन दिखता है. यह स्थिति बदल रही है जिसे ग्रामीण युवाओं को बदलना है.

आज भारतीय मानस कई तरह की मानसिक उथल-पुथल से गुजर रहा है. कुछ तो मोदी जी की नई आर्थिक नीतियों के कारण हो रहा है और कुछ सदियों बाद सदियों बाद हिन्दू मानसिकता को मिली राजनीतिक सत्ता के कारण है. एक तरफ बहुसंख्यक समाज अपनी दबी भावनाओं की खुली अभिव्यक्ति के लिये बेचैन है तो दूसरी तरफ इससे कुछ लोगों की तीखी प्रतिक्रियाएं भी हैं, पर इतना जरूर है कि यह समय आत्मविश्लेषण और अपनी जीवनशैली पर फिर से विचार करने का समझने का है.

हम अपने बच्चों को 'हैप्पी बर्थ डे' केक काटकर मनाएं, जिसका हमारी मान्यताओं और संस्कृति से कोई नाता नहीं है या उनका तिलक आरती उतार कर या आर्शीवाद या मंगलाचरण करके करें, यह हमें सोचना होगा. अगर हम चाहते हैं कि हमारी आने वाली पीढ़ियां अपनी भारतीय संस्कृति पर गर्व करे, परिवार में प्रेम को बढ़ाने वाली गतिविधियां हों, बच्चे बड़ों का सम्मान करें तो हमें अपने समाज में फिर से पारंपरिक मूल्यों की स्थापना करनी होगी. वे जीवन मूल्य, जिन्होंने हमारी संस्कृति को हजारों सालों तक बरकरार रखा, चाहे कितने ही तूफान आए.

पश्चिमी देशों में बस गये भारतीय परिवारों से पूछिये, जिन्होंने वहां की संस्कृति को अपनाया, उनके परिवारों का क्या हाल है और जिन्होंने वहां रह कर भी भारतीय सामाजिक मूल्यों को अपने परिवार और बच्चों पर लागू किया, वे कितने सधे हुए, सुखी और संगठित हैं. तनाव, बिखराव, तलाक, टूटन यह सब आधुनिक जीवन पद्धति के 'प्रसाद' हैं. इनसे बचना और अपनी जड़ों से जुड़ना, यह सनातनधर्मियों का मूलमंत्र होना चाहिये.

पिछले कुछ वर्षों से टेलीविजन चैनलों पर साम्प्रदायिक मुद्दों को लेकर आए दिन तीखी झड़पें होती रहती हैं जिनका कोई अर्थ भी नहीं होता. उनसे किसी भी संप्रदाय को कोई लाभ नहीं मिलता. सिर्फ उतेजना बढ़ती है, जबकि हर धर्म और संस्कृति में कुछ ऐसे जीवन मूल्य होते हैं, जिनका यदि अनुकरण किया जाए तो समाज में सुख, शांति और समरसता का विस्तार ही होगा. अगर हमारे टी.वी. एंकर और उनकी शोध टीम ऐसे मुद्दों को चुनकर उन पर गंभीर और सार्थक बहस कराएं तो समाज को दिशा मिलेगी.

हर धर्म को मानने वालों को यह स्वीकार करना होगा कि दूसरों के धर्म मे सब कुछ बुरा नहीं है और उनके धर्म मे सब कुछ श्रेष्ठ नहीं है. चूंकि हम हिन्दू बहुसंख्यक हैं और सदियों से इस बात से पीड़ित रहे हैं कि सत्ताओं ने कभी हमारे बुनियादी सिद्धांतो को समझने की कोशिश नहीं की. या तो उन्हें दबाया या उनका उपहास किया गया और उन्हें अनिच्छा से सह लिया गया. नए माहौल में इन पर खुलकर बहस होनी चाहिये थी, जो नहीं हो रही. निरर्थक विषयों को उठाकर समाज में विष घोला जा रहा है. इस बार दीपावली पर पांच दिनों का अवकाश है. इसलिये सब मिल-बैठ कर सोचें, कौन थे हम, क्या हो गए और होंगे क्या अभी. **विनीत नारायण.**

आशाएं...

काश हर रात ही दिवाली हो

दीपावली अकेला ऐसा त्योहार है, जिसमें हमारा जनमानस बाजार के महत्व को सामाजिक और सांस्कृतिक, दोनों तरह से स्वीकार करता है.

करीब-करीब हर त्योहार का ही बाजार से एक नाता होता है. हर त्योहार पर खरीदारी होती है, बाजार सजते हैं और मेले लगते हैं. कम या ज्यादा, हाट और बाजार हमारी हर खुशी, हर परंपरा, हर रस्मरिवाज का एक हिस्सा रहे हैं. यह ठीक है कि हम अपने त्योहारों की ज्यादातर तैयारियां अपने चूल्हे-चौके और घर-आंगन में ही कर लेते हैं, या कुछ चीजें मुहल्ला और गांव स्तर पर होती हैं और बाजार इसके लिए कच्चे माल की आपूर्ति भर करता है. लेकिन आप हर त्योहार की रौनक को शहर, कस्बे और गांव के छोटे-बड़े बाजारों में महसूस कर सकते हैं. होली हो, वसंत पंचमी हो या रक्षाबंधन ज्यादातर त्योहारों में बाजार एक सहायक की भूमिका में होता है. हर त्योहार में ढेर सारे रंग और उमंग होते हैं, जिनमें एक रंग और उमंग बाजार की भी होती है. एक तरह से यह इसलिए होता है कि हमारे ज्यादातर त्योहार कहीं न कहीं कृषि समाज की हमारी सदियों पुरानी आर्थिकी से जुड़े हैं. अच्छी फसल, अच्छी उपज और उससे आई आमदनी त्योहार की खुशियों का एक बड़ा कारक रही है. लेकिन दीपावली इन सबसे अलग है. हालांकि बाकी त्योहारों की तरह यह भी फसल से जुड़ी है, लेकिन दीपावली अकेला ऐसा त्योहार है, जिसमें बाजार केंद्रीय भूमिका में आ जाता है. जितना हम अपने घरों को सजाते हैं, उतना ही बाजार भी सजते हैं. या शायद उससे ज्यादा ही सजते होंगे. दीपावली बाजार का ही त्योहार है. वैसे एक तरह से यह बाजार का त्योहार है भी, क्योंकि आमतौर पर व्यापारी लोग इस दिन अपने नए साल की शुरुआत करते हैं. नए साल की शुरुआत का इससे अच्छा दिन और हो भी क्या सकता है? बाकी त्योहारों से दीपावली के रंग और उमंग सबसे अलग इसलिए भी होते हैं, क्योंकि यह ऐसा त्योहार है, जिसमें हम निजी तौर पर अपनी और अपने परिवार की खुशहाली की बात करते हैं, दरिद्रता को भगाने की बात करते हैं.बाजारों और बड़े शहरों की चकाचौंध को देखकर दीपावली को अक्सर अमीरों का त्योहार कह दिया जाता है. पर वास्तव में यह अमीरों का नहीं, अमीरी का त्योहार है, हर मन में पल रही अमीरी की कामना का त्योहार है. गरीब भी इस दिन कोशिश करता है कि वह यथासंभव एक दो दीये जलाकर अपनी दुनिया रोशन कर ले. वह मिठाई का एक छोटा-सा टुकड़ा खाकर जिंदगी की बाकी कड़वाहट को भूलने की कोशिश करता है.अगर समाज में दरिद्रता है और बाजार में कहीं खुशहाली दिख भी रही हो, तो उस खुशहाली में जरूर ही कुछ खोट है. बाजार और समाज एक साथ निखरते हैं, एक साथ आगे बढ़ते हैं. खुशहाली और समृद्धि की जिस भावना को हमारा समाज साल में बस एक दिन जीता है, उसके दायरे को सभी 365 दिनों तक ले जाने की जरूरत है. हमारी जिंदगी, हमारे समाज के न जाने कितने ऐसे कोने हैं, जिन्हें एकाध दिन नहीं, बल्कि हर दिन, हर समय रोशन करना होगा. आइए, इस दीपावली धन की देवी से यही वरदान मांगे.

हरजिंदर हेड.

इंटरनेशनल मीडिया

पोलियो से जंग की दुश्वारियां

Daily Outlook AFGHANISTAN The Leading Independent Newspaper

दुनिया में तीन ही देश ऐसे रह गए हैं, जहां पर पोलियो के वायरस बचे हुए हैं.ये तीन अफगानिस्तान, पाकिस्तान और नाइजीरिया देश हैं. पोलियो वायरस के खिलाफ जबर्दस्त प्रचार अभियान के कारण हाल के वर्षों में पोलियो के दर्ज मामलों की संख्या में भारी कमी आई है. पोलियो उन्मूलन मुहिम (पीईआई) मुल्क के हर बच्चे को इससे बचाव करने वाली दवा की खुराक देना चाहती है. पोलियो के मामलों में आई कमी ने भरोसे और उम्मीद का एक माहौल तो बनाया ही है, मगर इस अभियान की राह में खड़ी दुश्वारियां रुकावट डाल रही हैं. कई रिपोर्टे इस बात की तस्दीक करती हैं कि इस बीमारी के मामले घट रहे हैं. साल, 2011 में जहां अफगानिस्तान में पोलियो के 80 मामले दर्ज किए गए थे, वे घटकर 2012 में 37 रह गए. पिछले साल इसके 13 मामले सामने आए थे, वहीं मौजूदा वर्ष में हेलमंद, कांधार और कुंदूज सूबों से एक-एक मामले सामने आए हैं. देश भर में 56 लाख बच्चों के पोलियो टीकाकरण का अभियान शुरू हुआ था, और यह उम्मीद की जाती है कि 2017 में अफगानिस्तान में पोलियो वायरस का अंत हो जाएगा. विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ), यूनीसेफ और हमारे मुल्क का स्वास्थ्य मंत्रालय, मिलकर पोलियो उन्मूलन का अभियान छेड़े हुए हैं. अफगानिस्तान में यूनीसेफ की पोलियो डायरेक्टर मेलिसा कोरकम के मुताबिक, 'हजारों की तादाद में पोलियो कार्यकर्ता घर-घर जाकर बच्चों को पोलियो की खुराक दे रहे हैं. यह कोई आसान काम नहीं है. लेकिन इन बहादुर कार्यकर्ताओं की बदौलत हम इस वायरस के खात्मे के सबसे करीब पहुंच गए हैं.' इस शानदार प्रगति के बावजूद कई चुनौतियां अब भी कायम हैं. इनमें से दो तो काफी गंभीर हैं. एक, कबीलाई इलाकों में, जहां आर्तकियों का दबदबा है, इस मुहिम को अविश्वास की नजरों से देखा जाता है, क्योंकि दहशतगर्द इसके खिलाफ अफवाहें फैलाते रहते हैं. दूसरी समस्या यह पेश आती है कि बगावत वाले सूबों में स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की जान खतरे में होती है. कुल मिलाकर पोलियो उन्मूलन मुहिम की राह में दहशतगर्दी एकमात्र बड़ी रुकावट है. डेली

आउटलुक,अफगानिस्तान.

नेटीजन

ताकि और स्वच्छ हों चुनाव

चुनाव आयोग साफ-सुथरे निर्वाचन के लिए नए-नए कायदे गढ़ रहा है, क्या इसका फर्क पड़ेगा?

पिछले चुनाव से इतर इस बार नामांकन पत्र जमा करते समय प्रत्याशी को अपनी आय, आय का स्रोत बताने के साथ-साथ पत्नी की आय का स्रोत बताना भी जरूरी होगा. यह वह पेच है, जो कई प्रत्याशियों की मुश्किलें बढ़ा सकता है. वहीं, चुनाव आयोग ने पहली बार मोबाइल नंबर और ईमेल आईडी के साथ-साथ सोशल मीडिया अकाउंट की भी जानकारी मांगी है. अब प्रत्याशी को यह भी बताना होगा कि सोशल मीडिया के किस प्लेटफॉर्म पर उसका किस नाम से अकाउंट है. इनके अलावा उम्मीदवार को संयुक्त प्रॉपर्टी, संयुक्त बैंक खाते के अलावा विभिन्न तरह के टैक्स के बकाये की भी जानकारी देनी होगी. हिमाचल प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी पुष्पेंद्र राजपूत ने बताया कि समय के साथ नामांकन पत्र में बदलाव किए गए हैं. अब नामांकन पत्र के साथ एक अतिरिक्त हलफनामा देना होगा. इस हलफनामे में प्रत्याशी को बताना होगा कि पिछले दस साल के दौरान उसके पास कोई सरकारी घर था या नहीं. अगर था, तो उसे यह बताना होगा कि उसके ऊपर उक्त भवन के बिजली, पानी या टेलीफोन का कोई बकाया तो नहीं है. खास बात यह है कि इस हलफनामे के साथ प्रत्याशी को संबंधित एजेंसी का 'नो ड्यूज सर्टिफिकेट' भी देना होगा. जगदीश्वर चतुर्वेदी की फेसबुक वॉल से.

हमे देख, हमारी श्रद्धा देख

मेरे प्यारे साईं
एक बच्ची की खुशी के लिये
तूने पानी से दिये जलाए,
जैसे कह रहा हो
बेबसों के आंसुओं को
'स्नेह' में बदल
स्नेह का दीप जला।
स्नेह का तो पता नहीं
पर देखे...
हम..तेरे प्यारों ने
तेरे समाधिस्थल को
सोने का बनाकर
सोने का दीपक जला रहे हैं।
श्रद्धा हो तो ऐसी
खुश है ना तू?!

रवि अत्राम,मलकापुर.

आओ एक दीप जलाएं

आस्था और तेजोमय जीवन का महापर्व है दीपावली. राम की साक्षी में यह तम पर आलोक की विजय का पर्व है. इस महापर्व पर हमें भी अपने आप से पूछना चाहिये कि मानवीय रिश्तों को, उनमें छुपी आत्मीय भावनाओं को बनाए रखने में हमारा कितना योगदान है? अगर हम अपनी आराध्य शक्तियों को साक्षी बनाकर औरों के काम न आ सके, तो फिर पूजा और पाखंड में भेद ही क्या रहा? जब तक जुबान पर सरस्वती का वास रहता है, तब तक लक्ष्मी भी साथ रहती है.अमावस्या की रात को दीपों से जगमगाने वाले इस त्यौहार में आज भी कई घर, गरीब, अनाथ और जरूरतमंद ऐसे भी रह जाते हैं, जिन तक दीपों का प्रकाश पहुंचता ही नहीं है. क्यों न इस दिवाली में हम मानवता को प्रकाशित करता एक दीया ऐसे लोगों के दरों पर भी जलाएं? इस दिवाली में कोशिश करें कि हम अपनी शक्तिनुसार ऐसे लोगों की कुछ मदद करें, जिससे उनके चेहरों पर और आंखों में भी खुशी झलके, उनकी उस हँसी को आर्शीवाद मानकर हम खुद भी उस खुशी का अनुभव कर सकें.

अपने रौशन कमरों में बैठे,
बस्तियों के अंधेर तकते-तकते
अब न बैठें ऐसे चुपचाप।
एक दीये में स्नेह-प्यार लेकर
साथ-संबंधों की बाती गूंथ,
प्रेम के रस में डाल
हम और आप चलें चुपचाप,
एक दीया वहां भी जलाएं।।

श्यामसुंदर टावरी,
अमरावती.

प्रतिदिन अखबार

यह पत्र मालिक, प्रकाशक, सम्पादक नानक आहूजा द्वारा देविका वेब प्रिंटर्स, राजापेठ, अमरावती से मुद्रित कर 'प्रतिदिन अखबार' कार्यालय, देविका परिसर, ब्राह्मण सभा के पीछे, दरोगा प्लॉट, राजापेठ, अमरावती 444 606 से प्रकाशित किया है. फोन-0721-2560155/56/57/58 फैक्स-0721-2677708 E-mail :- pratidinnews@gmail.com
'प्रतिदिन अखबार' में प्रकाशित होनेवाले विभिन्न लेख, पत्र, साहित्य, लेखकों, कवियों आदि के विचारों या तथ्यों पर आधारित होते हैं. इन लेखकों के विचारों अथवा तथ्यों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है. संपादक पर मात्र सम्पादकीय लेखों का ही दायित्व है. संपादक-नानक आहूजा, समाचार संपादक-प्रवीण आहूजा.